अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जून–2023

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका
अजायब ✿ बानी

वर्ष–इक्कीसवां	अंक–दूसरा	जून– 2023

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परमात्मा ही परमात्मा 3
(गुरु नानकदेव जी की बानी)
06 जून 1992 पोटर वैली, अमेरिका

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
दोष 12

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
बच्चों के लिए एक कहानी 13

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
सच्चा सेवक 15
06 फरवरी 1982 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सेवादारों को संदेश
सेवा 23
03 मई 1985 अमेरिका

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन
पति-पत्नी 27
27 मई 1977 सन्तबानी आश्रम, न्यू हैम्पशायर

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ.सुखराम सिंह नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 255 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

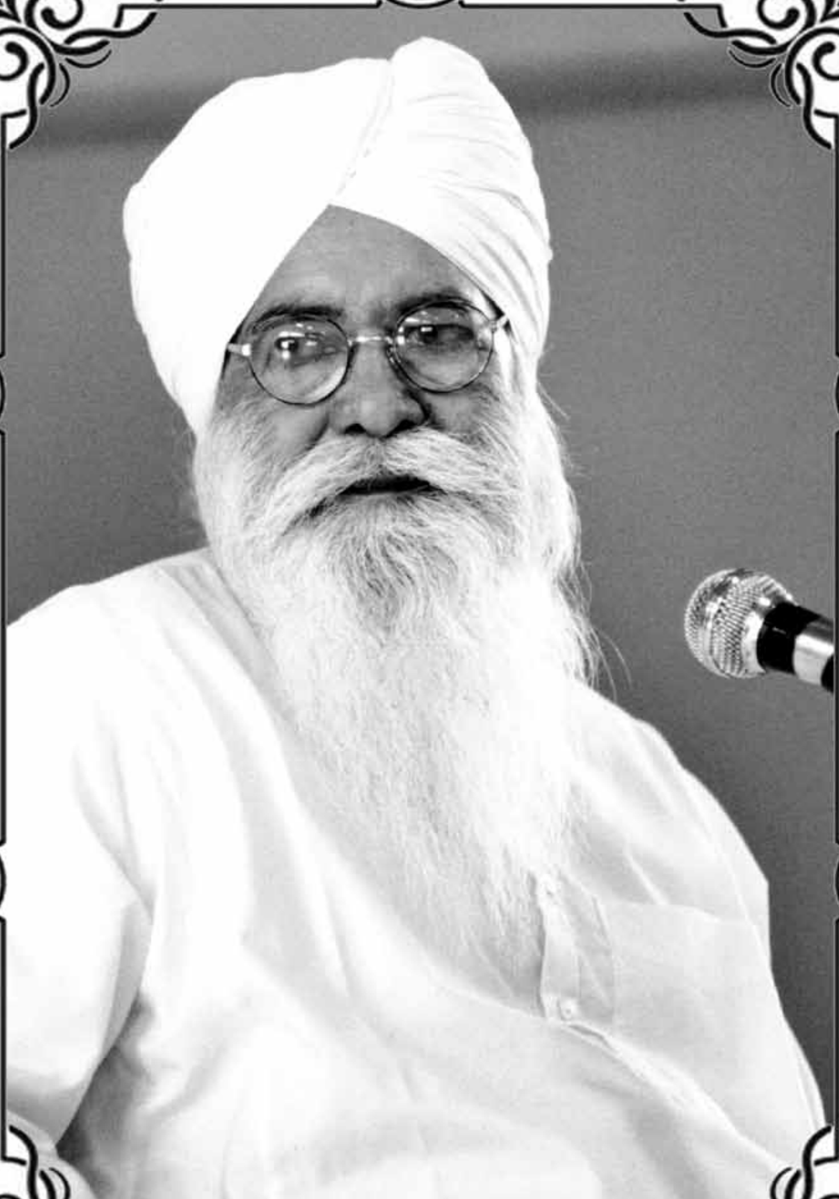

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा ही परमात्मा

DVD 561(2)

गुरु नानकदेव जी की बानी   06 जून 1992   पोटर वैली, अमेरिका

हाँ भई, जिसे जहाँ भी जगह मिलती है वहाँ बैठकर आराम से सतसंग सुनें। मैं अपने गुरुदेव सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ जिन्होंने हमारे ऊपर बहुत भारी दया की है, अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। गुरु नानकदेव जी के पास कुछ सिद्धों ने आकर सवाल किए, ''क्या आपने परमात्मा देखा है, क्या सचमुच परमात्मा है?'' गुरु नानकदेव जी महाराज ने कहा, ''हाँ, मैंने परमात्मा देखा है, मैं जिस परमात्मा की सिफत करता हूँ वह जाहिर दिखाई देता है।''

नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा

जब यही सवाल कबीर साहब से किया गया तो उन्होंने कहाः

अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ दीना मीठा।
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा।।

महाराज सावन सिंह जी सतसंग करने के लिए भसौड़ा गए तो उनसे एक पुजारी ने यही सवाल किया, ''क्या आपने परमात्मा देखा है?'' महाराज जी ने कहा, ''हाँ, गुरु कृपा से देखा है।'' प्यारेयो, यह अहंकार नहीं होता बल्कि सन्त सच्चाई बयान करते हैं वे जो आँखों से देखते हैं वही बोलते हैं। आपके आगे गुरु नानकदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, इसे गौर से सुनेंः

जह देखा तह दीन दइिआला।। आदि न जाई प्रभु किरपाला।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं जहाँ भी निगाह मारता हूँ, मुझे हर जगह **परमात्मा ही परमात्मा** नजर आता है। चाहे पशु–पक्षी, औरत–मर्द, हिन्दु–मुसलमान, सिक्ख या ईसाई है। मुझे पत्ते–पत्ते में

परमात्मा ही परमात्मा नजर आता है। परमात्मा किसी को सजा नहीं देता। परमात्मा रहीम है, रहम का समुंद्र है। सब पर कृपा करता है, वह कृपाल है।

जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राया।।

आप प्यार से समझाते हैं कि वह सबका राजा है, सबका बादशाह है। वह कुलआलम में रहते हुए भी निराला है। अब सवाल पैदा होता है कि इंसान मरते हैं तो क्या परमात्मा भी मरता है? आप कहते हैं, ''नहीं, वह जन्म–मरण से ऊपर है वह इंसानों के बीच रहते हुए भी निराला है।''

जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ।।
ना तिसु भैण न भराउ कमाइिआ।।

परमात्मा ने इस संसार की रचना रची है, उसका न कोई भाई–बंधु है, न कोई भाई–बहन है न उसे किसी माता–पिता ने ही पैदा किया है।

न तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइिआ।।

वह न तो उत्पन्न होता है न लय होता है, वह न बूढ़ा होता है न जवान होता है न बच्चा होता है। परमात्मा न किसी खास औरत–मर्द का है, न किसी खास समाज का है, न किसी मुल्क का ही है। परमात्मा किसी की पर्सनल जायदाद नहीं। परमात्मा सबका है जो उसे याद करता है औरत–मर्द, बच्चा–बूढ़ा, सिक्ख–ईसाई, हिन्दु–मुसलमान कोई भी परमात्मा को याद करे, परमात्मा उसका है। कबीर साहब कहते हैंः

जाति पाति पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।।

परमात्मा यह नहीं कहता कि मेरे पास ईसाई आएं, मुसलमान न आएं, हिन्दु आएं, सिक्ख न आएं। परमात्मा कहता है, ''मैं सबके साथ ही प्यार करता हूँ, कोई मेरे पास आए तो सही।'' परमात्मा प्यार का समुंद्र है, रहम का समुंद्र है।

तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला।। तू पुरखु अलेख अगम निराला।।

अब गुरु नानकदेव जी महाराज परमात्मा की महिमा गाते हुए कहते हैं, ''तू अकाल है तेरे सिर के ऊपर काल नहीं, काल को तूने पैदा किया है। तू अगम है, निराला है, स्वामी है, अनामी है।'' ये उन महात्माओं का कहना है जिनका पर्दा खुल गया जो अंदर जाकर परमात्मा से मिले उन्होंने इस सच्चाई को आँखों से देखा और बयान किया।

सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइि लिव लाइिआ।।

फिर गुरु नानक साहब कहते हैं कि वह परमात्मा 'शब्द' है। 'शब्द' में शान्ति है, जब सच्चखंड पहुँच जाते हैं तो शान्ति मिल जाती है। इस दुनिया में लोगों ने शान्ति को ढूंढने की बहुत कोशिश की। शान्ति न हुकूमत में है, न धन-दौलत में है और न किसी विषय-विकारों में है।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''शान्ति वह 'शब्द' है। मैं आपको गाने बजाने वाला शब्द नहीं बता रहा, न ही वह 'शब्द' लिखने-पढ़ने या बोलने वाला होता है। मैं उस 'शब्द' की महिमा करता हूँ जो बिना लिखा कानून है बिना बोली भाषा है।''

त्रै वरताइि चउथै घरि वासा।। काल बिकाल कीए इिक ग्रासा।।

जब हम अभ्यास करके आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारन के तीनों पर्दे उतार देते हैं, अंदर सच्चखंड में पहुँचकर सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है तो नीचे की रचना का पता अपने आप ही लग जाता है।

निरमल जोति सरब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइिआ।।

अब गुरु नानक साहब कहते हैं कि मुझे किस तरह गुरु ने परमात्मा दिखाया? सबसे पहले गुरु ने मुझे सिमरन दिया कि सिमरन करके नौं द्वारे खाली कर आँखों के पीछे आ, उस ज्योति और प्रकाश में आ, वहाँ अनहद 'शब्द' दिन-रात धुनकारे दे रहा है। गुरु ने 'शब्द' के जरिए नाम के जरिए मुझे उस परमात्मा को दिखाया।

महात्मा सुनी–सुनाई बातें नहीं करते उन्होंने जिंदगी में अपने गुरु की कृपा से जो प्राप्त किया होता है, वे वही बयान करते हैं। मैं सदा बताया करता हूँ कि किसी महात्मा के चरणों में जाने से पहले उसकी जिंदगी जरूर पढें। क्या उसकी अभ्यासी जिंदगी है, क्या उसने दस, पंद्रह, बीस साल परमात्मा की खोज में लगाए हैं?

गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, मौलाना रूम, शम्स तबरेज, बाबा जयमल सिंह जी, सावन सिंह जी, कृपाल सिंह जी आज तक जितने भी परम सन्त संसार में आए हैं, आप उनकी हिस्ट्री पढ़कर देखें। उन्होंने कितनी मेहनत की कितना संयम रखा? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गल्ली किन्हे न पाया

आप नये भजनों में पढते हैं:

ऐह गल्लां दा मजबून नहीं, कोई वी करके देखे।

सन्त यह नहीं कहते कि हम कामयाब हुए हैं आप कामयाब नहीं हो सकते। कोई भी यह प्रेक्टिस करके देख सकता है, अंदर जाकर शान्ति प्राप्त कर सकता है। शिष्य के अंदर गुरु के लिए श्रद्धा और अटूट प्यार होना जरूरी है। शिष्य मेहनत का भी चोर न हो, शिष्य गुरु को साथ लेकर ही अंदर जा सकता है।

ऊतम जन संत भले हरि पिआरे।। हरि रस माते पारि उतारे।।

संसार में वे सन्त–महात्मा उत्तम हैं जिन्होंने अंदर जाकर उस 'शब्द' को प्रकट कर लिया, शब्द रूप हो गए हैं। महात्मा, परमात्मा को प्यारे होते हैं। जो महात्मा के साथ प्यार करते हैं, वे भी परमात्मा को प्यारे होते हैं क्योंकि प्यारे का प्यारा भी प्यारा होता है।

नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइिआ।।

आप प्यार से कहते हैं कि मैं सन्तों के पैरों की धूड़ी के समान भी नहीं हूँ। मैं उनकी संगत की बड़ी कद्र करता हूँ, संगत की कद्र उसे होगी जिसे गुरु की कद्र होगी। मैंने गुरु की कृपा से उस परमात्मा को प्राप्त किया है।

तू अंतरजामी जीउ सभि तेरे।। तू दाता हम सेवक तेरे।।

आप प्यार से कहते हैं कि तू अंतरयामी है, तू दाता है, हम सब तेरे सेवक हैं। परमात्मा को सब जीव–जंतुओं का पता है कि किसके दिल में मुझसे मिलने का शौक है, कौन मुझसे मिलना चाहता है। परमात्मा अंदर से चाबी मरोड़कर उसे पूरे महात्मा के पास ले आता है, महात्मा 'नाम' की दात दे देते हैं।

अंमृत नामु कृपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइिआ।।

आप कहते हैं कि परमात्मा गुरु से नाम का सच्चा रतन दिलवाता है। गुरु कृपा करके नाम का दान देता है। मैं महाराज सावन सिंह जी का वचन सदा ही दोहराया करता हूँ, वे कहा करते थे, ''हम कहते हैं कि हमनें डेरे नाम लेने के लिए जाना है, ऐसा वही कहते हैं जिनकी आँखें बंद हैं, जब आँखें खुल जाती हैं फिर पता लगता है कि कोई हमें डेरे में बुलाता था। हम कहते हैं कि हम सतसंग में जाते हैं, जब आँखें खुल जाती हैं तो पता लगता है कि कोई ताकत हमें सतसंग में भेज रही है, खींच रही है।''

पंच ततु मिलि इिहु तनु कीआ।। आतम रामु पाए सुखु थीआ।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि हमारा शरीर पाँच तत्वों–हवा, आग, पानी, आकाश और धरती का पुतला है। अगर 'शब्द' प्रकट हो जाता है तो शान्ति है, नहीं तो हम तपते हुए आते हैं तपते हुए ही चले जाते हैं।

करम करतूति अंमृत फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइिआ।।
ना तिस भूख पिआस मनु मानिआ।। सरब निरंजनु घटि घटि जानिआ।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा को भूख–प्यास और सुख–दुःख नहीं जो उसे प्रकट कर लेते हैं, उनकी भी यही हालत हो जाती है।''

अंमृत रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइि सुभाइिआ।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि वह अमृत के रस में मता हुआ है। अमृत के आधार पर ही आत्मा को ताकत मिलती है। मन मान जाता है, अमृत का रस पीकर मन बैरागी हो जाता है। पहले हमें विषय–विकार मीठे लगते हैं हम इन्हें छोड़ नहीं सकते, जब अंदर अमृत पीने के लिए मिल जाता है तब अंदर सच्चा बैराग पैदा हो जाता है।

अधिआतम करम करे दिनु राती।। निरमल जोति निरंतरि जाती।।
सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइिआ।।
बेणु रसाल वजावै सोई।। जा की तृभवण सोझी होई।।
नानक बूझहु इिह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइिआ।।

वैसे जो भी परमात्मा को जिस भी तरीके से याद करता है वह यह समझता है कि यही गुरुमत है। गुरु नानक साहब कहते हैं कि जब हम अपनी मत छोड़कर गुरु की मत पर चलते हैं तभी हम गुरुमत पर चलने का दावा कर सकते हैं।

अैसे जन विरले संसारे।। गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे।।

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि ऐसा नहीं कि दुनिया में कोई महात्मा है ही नहीं, दुनिया में ऐसे विरले–विरले महात्मा हैं।

जग महि उत्तम काढ़ीअहि विरले केई केइ

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सच्चाई का बीज नाश नहीं होता, सच्चाई सदा है लेकिन देखने वाले चाहिए।''

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।।

आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइिआ।।

आप प्यार से कहते हैं कि संसार में ऐसे महात्मा विरले हैं, जो 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं, शब्द को प्रकट करते हैं। वे आप तर जाते हैं अपनी कुल और संगत को तार लेते हैं, उनका ही दुनिया में आना मुबारक है। कबीर साहब कहते हैंः

जननी जने तो भक्तजन, या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे, काहे गँवावे नूर।।

गुरु साहब कहते हैंः

धनु धंनु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरु जणिआ माई
धनु धंनु गुरु जिनि नामु अराधिया
आपि तरिया जिनी डिठा तिना लए छडाए

घरू दरू मंदरू जाणै सोई।। जिसु पूरे गुर ते सोझी होई।।

हमारा घर सच्चखंड है, हमारी आत्मा सतनाम की अंश है। जब पूरा गुरु मिल जाता है, वह हमें इस रास्ते पर डाल देता है, उस नाम के साथ जोड़ देता है जो कण-कण में व्यापक है तब हमें इसकी समझ आती है।

काइिआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइिआ।।

यह शरीर एक महल है, इसके अंदर परमात्मा का तख्त है, वह खुद ही उस तख्त पर विराजमान है।

चतुर दस हाट दीवे दुइि साखी।। सेवक पंच नाही बिखु चाखी।।

अब गुरु नानकदेव जी महाराज बहुत प्यार से कहते हैं कि जो पाँच शब्द की कमाई करता है, शब्द को प्रकट कर लेता है, वह चौदह लोक में फैली माया की जहर को नहीं चखता, वह इस जहर से बचकर अंदर जाता है। महात्मा हमें संगत में अनुशासन सिखाते हैं कि स्त्री के लिए एक ही मर्द और मर्द के लिए एक ही स्त्री होती है। काम भरी आँख से पराई

स्त्री को देखना पाप है और स्त्री का पराए पुरुष को काम भरी आँख से देखना भी पाप है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

पर त्रिया रूप न पेखे नेत्र, साध की टहल सन्त संग हेत।

भाई गुरदास जी कहते हैंः

देख पराई चंगियां धीआं भैणां मावां जाणें।

प्यारेयो, जो इस स्थूल दुनिया में कायम नहीं वह अंदर सूक्ष्म में जाकर कैसे कायम रह सकता है? वहाँ पर यहाँ से ज्यादा सुंदर औरतें हैं और औरतों के लिए सुंदर मर्द हैं। इसलिए सन्त अपने प्यारे बच्चों को मजबूत करके ही अंदर के मंडलों में से लेकर जाते हैं।

अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुर मिलिअै हरि धनु पाइिआ।।

आप प्यार से कहते हैं कि आपके अंदर बहुत अमोलक सुंदर वस्तु है लेकिन इस वस्तु को आप तभी पा सकते हैं जब आप गुरु से मिलते हैं, गुरु की बताई हुई हिदायत पर चलते हैं। किसी के पास कौड़ियां हैं हम उससे वह कौड़ियां माँगें तो वह देने के लिए तैयार नहीं होगा अगर हम उसके हाथ में डॉलर पकड़ा दें तो उसकी कौड़ियों वाली मुट्ठी अपने आप ही ढीली हो जाती है। सन्त-महात्मा कहते हैं कि आप कमाई करके अंदर जाएं, अंदर आपको इससे प्यारी चीजें मिलेंगी, वहाँ आप डोलेंगे नहीं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर कोई यह कह दे कि अमेरिका में जायदादें मुफ्त मिलती हैं तो सारी दुनिया वहाँ जाने के लिए तैयार हो जाएगी।'' सन्त कहते हैं कीमती, अमोलक वस्तु आपके अंदर है लेकिन कोई अंदर जाने के लिए तैयार नहीं होता। सन्त यह भी नहीं कहते कि आप अकेले जाएं, सन्त कहते हैं कि हम हर कदम पर आपके साथ हैं।

तखति बहै तखतै की लाइिक।। पंच समाए गुरमति पाइिक।।
आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइिआ।।

गुरु नानकदेव जी ने बताया है कि यह शरीर एक महल है। इसके अंदर परमात्मा का तख्त है, परमात्मा खुद उस तख्त पर बैठा है। जो 'पाँच शब्द' की कमाई करता है, वही उस तख्त पर बैठने के लायक है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि परमात्मा है और आगे भी उसी परमात्मा ने रहना है, वह आदि–जुगादि से चला आ रहा है। पाँच शब्द का रास्ता खुद परमात्मा ने बनाया है। यह रास्ता कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, मौलाना रूम, शम्स तबरेज ने नहीं बनाया यह ईश्वरकृत है। बड़े–बड़े चोटी के महात्मा यही बताते आए हैं कि यह रास्ता खुद परमात्मा ने बनाया है।

तखति सलामु होवै दिनु राती।। इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती।।

गुरुमुखों को पता है, वे अंदर जाकर परमात्मा से मिल जाते हैं, सारे ही खंड–ब्रह्मांड उनके आगे नमस्कार करते हैं।

नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइिआ।।

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''अगर आप शान्ति चाहते हैं, परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो पहले गुरु के पास जाएं, नामदान प्राप्त करें फिर आप नाम की कमाई करें और अंदर जाकर सच्चाई को खुद देखें।''

हमें भी चाहिए कि हम तन–मन से दिल लगाकर ईमानदारी से नाम जपें और अपनी आत्मा को शान्ति दें। सन्त कहते हैं कि आज का काम कल पर न छोड़ें कि मैं भजन कल कर लूँगा। कल भी वही मन आपके पास होगा जिसने आज आपको यह सलाह दी है।

***

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

दोष

अगर हम यह सोच लें कि मौत निश्चित है तो हमारी जिंदगी में परिवर्तन आ जाएगा। हमें भजन–सिमरन करना चाहिए अगर हम ऐसा नहीं करते तो हमारा मन दूसरों के बारे में सोचेगा और दूसरों में **दोष** ढूंढेगा। जब हम दूसरों में दोष ढूंढते हैं तो उनकी बुराईयां हमारे अंदर आ जाती हैं। आप जैसा सोचेंगे आप वैसे ही बन जाएंगे।

परमात्मा कहता है, ''जो मुझे और लोगों में देखता है वही मेरा सबसे प्यारा बच्चा है।'' आपको सबके साथ मीठा बोलना चाहिए, आपकी किसी भी बात से किसी का दिल नहीं दुखना चाहिए।

अगर आप परमात्मा से प्यार करना चाहते हैं तो दूसरों की निन्दा न करें क्योंकि उनमें भी परमात्मा रहता है। अगर आपको किसी ऐसे आदमी का सामना करना पड़े जिसमें बहुत सी बुराईयां हैं तो आप उससे किनारा कर लें। आप दूसरों में **दोष** ढूंढने की बजाय अपने आप में दोष ढूंढें। दूसरों के दोष ढूंढने वाले आप कौन होते हैं?

परमात्मा को पाना आसान है लेकिन अपने आपको सुधारना बहुत मुश्किल है। परमात्मा सबमें है तो क्या आप किसी को चोट पहुँचाएंगे? आपको अपने **दोष** त्याग देने चाहिए इसलिए मैं सभी नामलेवाओं को डायरी रखने के लिए कहता हूँ।

अगर कोई आदमी दूसरे लोगों को नुकसान पहुँचाने की बुरी आदत नहीं छोड़ता तो आप दूसरों की मदद करने की अपनी प्यारी आदत को क्यों छोड़ते हैं? अगर आपको किसी का निरिक्षण भी करना पड़े तो उसके अच्छे गुणों को देखें, **दोष** तो सबमें होते हैं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

बच्चों के लिए एक कहानी

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज को जुल्म की खातिर तलवार उठानी पड़ी। जब जालिमों का ज्यादा जोर पड़ा तो उन्हें अपना रिहायशी किला भी छोड़ना पड़ा। उस समय प्रेमियों के द्वारा दी हुई लंगर की सेवा वे उठाकर नहीं ले जा सकते थे क्योंकि उस वक्त चाँदी के रूपये होते थे, इतनी सारी चाँदी उठानी मुश्किल थी। उन्होंने वह रूपये किसी को खाने के लिए नहीं दिए। वहाँ पास में ही एक दरिया बहता था, वे चाँदी के रूपये उस दरिया में फैंकने लगे। कुछ सिख जिन्हें पता नहीं था कि सेवा खानी अच्छी है या बुरी है? उन सिखों ने गुरु गोबिंद सिंह जी की माता गुजरी के पास जाकर विनती की कि बहुत से सिख मोहताज हैं, उन्हें यह रूपये दिए जाएं।

माता ने गुरु गोबिंद सिंह जी से कहा, ''लाल, तू इस माया को दरिया में क्यों फैंक रहा है? तेरे सिख बहुत गरीब हैं, तू उन्हें यह माया दे दे।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''मैं तेरा बेटा हूँ, तू मुझे लाल कहती है। सबसे पहले तू मुझे जहर दे, मैं जहर खा लूं अगर तू माँ बनकर मुझे जहर नहीं दे सकती तो ये सिख मेरे लाल, मेरे बच्चे हैं, मैं इन्हें जहर कैसे दे दूँ? लंगर की सेवा इनके लिए फायदेमंद है अगर ये खाली रहकर इस सेवा को खाएंगे तो यह जहर का काम करेगी।''

सन्त–सतगुरु कभी भी आज्ञा नहीं देते कि आप खाली बैठें। सन्त कहते हैं कि आप लंगर में तभी खाना खा सकते हैं अगर आप वहाँ सेवा करते हैं, भजन–सिमरन करते हैं; नहीं तो आप जिनका खाएंगे, आपका भजन उनके हिस्से में जाएगा और उनकी बीमारियाँ आपको मिलेंगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अमीर लोग लंगर में सेवा डाल जाते हैं और गरीब खा जाते हैं। महात्मा उसमें से कभी भी अपने लिए एक पाई तक खर्च करने के लिए तैयार नहीं होते।'' ✻✻✻

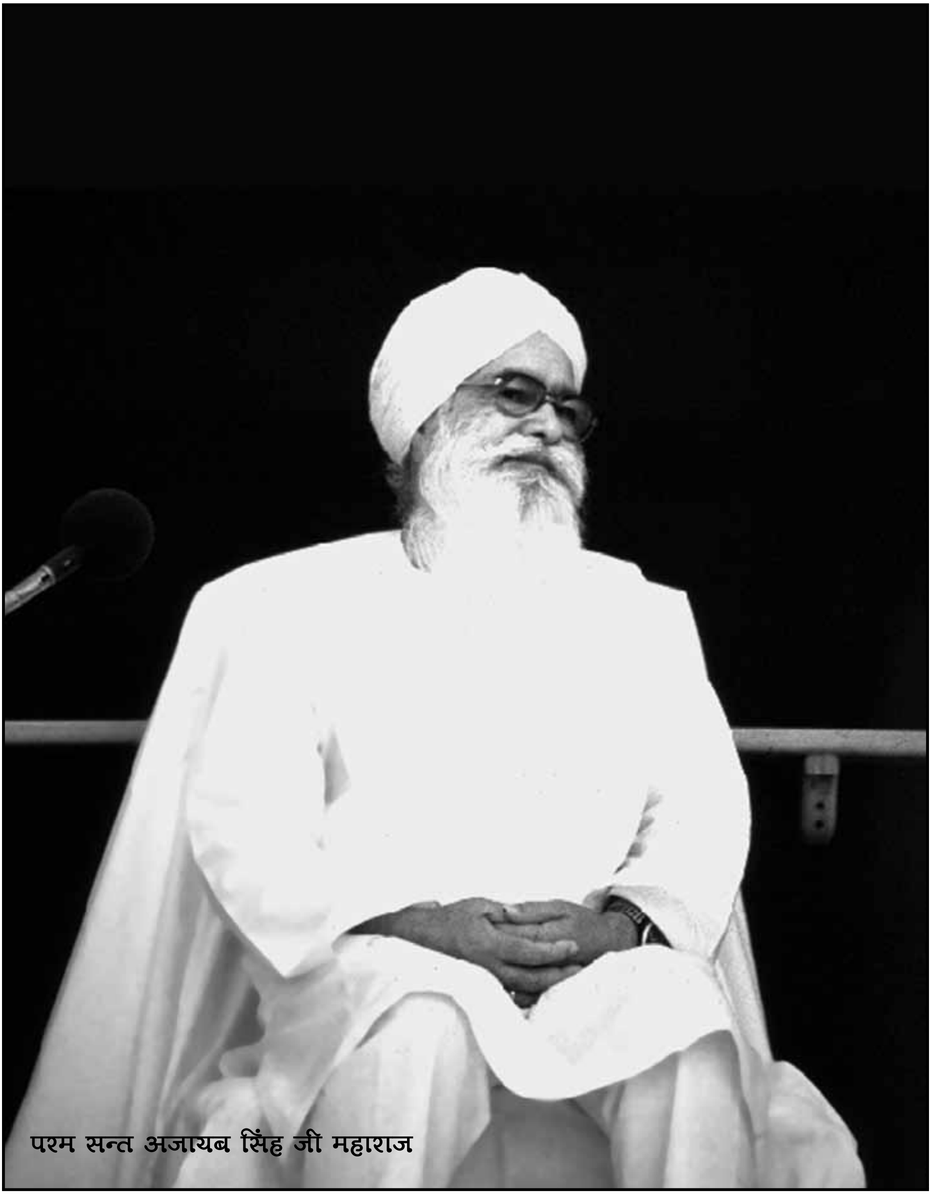
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सच्चा सेवक

16 पी.एस.आश्रम, राजस्थान 06 फरवरी 1982 DVD 601(1)

एक प्रेमी : *सच्चे सेवक के दिल में क्या होता है और कोई किस तरह से इस तरह का दिल बना सकता है?*

बाबा जी: सच्चे सेवक के दिल में गुरु ही गुरु होता है और कोई गरज नहीं छुपी होती। वह गुरु से गुरु को ही मांगता है, दुनिया का कोई सामान नहीं मांगता और कहता है:

विण तुध होर जे मंगणा सिर दुखा कै दुख।
देह नाम संतोखीआ उतरै मन की भुख।।

सच्चा सेवक अपने गुरु को इंसान नहीं कुल मालिक समझता है। सच्चे सेवक को यह पता है कि सब दुनिया का कर्ता मेरा गुरु है, दुनिया को बनाने वाला और फनाह करने वाला भी मेरा गुरु ही है। मेरी मौत और मेरी जिंदगी मेरे गुरु के हाथ में है। बुल्ले शाह कहते हैं:

गुरु जो चाहे सो करता है, गुरु खाली बर्तन भरता है।

गुरु जो चाहे करता है अगर कोई खाली बर्तन लेकर गुरु के पास जाता है तो गुरु बर्तन को भर देते हैं। धर्मदास ने अपने गुरु के आगे यही कहा:

सुपने इच्छा ना उठे गुरु आन तुम्हारी हू।

गुरु मैं आपकी कसम खाकर कहता हूं कि दुनिया का कोई भी ख्याल मेरे सपने में नहीं उठ रहा, जो कुछ भी है आप ही हैं। अंदर देखता हूँ तो आप हैं, बाहर देखता हूँ तब भी आप ही दिख रहे हैं। सच्चे सेवक के अंदर, दुनिया की तरह ईर्ष्या-जलन, किसी के साथ वैर या किसी के साथ प्यार नहीं होता। **सच्चा सेवक** दोस्त और दुश्मन के अंदर अपने पूर्ण गुरु को

देख रहा होता है, उसे पता है कि दोनों के अंदर ही मेरा सतगुरु बैठा है। यह गुरु की मर्जी है कि शाबाश दे या किसी से निंदा करवाए।

सच्चाई तो यह है कि जो गुण गुरु में होते हैं वही गुण उस सच्चे सेवक के अंदर आ जाते हैं, गुरु और ऐसे **सच्चे सेवक** में कोई फर्क नहीं होता। गुरु के बाद उस सच्चे सेवक ने ही उनका मिशन चलाना होता है क्योंकि जिस मंडल से वह महान आत्मा आई होती है, सच्चा सेवक भी उसी मंडल से आया होता है। फर्क बिछोड़े का होता है लेकिन जब सच्चा सेवक, गुरु के चरणों में आ जाता है तो वह पहचान लेता है कि यह मेरा पुराना मित्र है, मेरी आत्मा जिस चीज की बनी है उसी तत्व का परमात्मा बना हुआ है। महात्मा चतुरदास ने कहा है:

खोल तनी गल लाया सज्जन बित्थर ही ना मसा ।
सज्जन सेति सज्जन मिलिया जैसे खंड पतासा ।।

सच्चा सेवक वही है जिसे यह पता नहीं चलता कि दुनिया के अंदर जिंदगी किस तरह गुजर रही है। वह अपने आपको भूल जाता है, उसके मन और आत्मा के ऊपर सतगुरु का कंट्रोल हो जाता है। सच्चा सेवक अपनी मर्जी छोड़ देता है, गुरु की मर्जी पर जीना सीख लेता है। हम सब अपनी-अपनी जगह खुद को **सच्चा सेवक** समझते हैं। जरा हम अपने अंदर झाँककर देखें! सच्चे सेवक और हमारे अंदर कितना फर्क है? बुल्लेशाह ने कहा था:

दिल कमजोर फसे विच दुनिया रीस आशिका करदे ।
गल्ली भालण मजा प्रेम दा पैर पीच्छा नू धरदे।।

सच्चा सेवक अपने गुरु को एक सेकंड के लिए भी नहीं भूलता अगर सोता है तो गुरु को साथ लेकर सोता है, उठता है तो फिर गुरु सामने हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

गुरु गुरु गुरु करि मन मोर, गुरु बिना मै नाही होर।

वह हमेशा ही सोता-जागता गुरु गुरु ही करता रहता है, सच्चे सेवक की महिमा बयान से बाहर होती है।

एक प्रेमी: *हुजूर कृपाल बहुत भाग्यशाली थे कि उन्हें अजायब के अंदर एक सच्चा सेवक मिला। क्या आप भी उतने ही भाग्यशाली हैं कि आपको कोई सच्चा सेवक मिला है? अगर ऐसा है तो क्या आपने उसे आगे बढ़ने के लिए छुपा कर रखा है?*

बाबा जी: मैं आमतौर पर कहा करता हूं कि जिस तरह शिष्य को गुरु भाग्य से मिलते हैं उसी तरह गुरु को भी शिष्य बहुत ऊंचे भाग्य से मिलता है। गुरु बहुत लम्बे-लम्बे सफर करके, बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलकर सच्चे सेवक की तलाश में जाते हैं। गुरु सेवक की खातिर सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि गुरु ने उस सेवक के अंदर अपनी सारी शक्तियां लेकर बैठना होता है।

यह तो वक्त ही बताता है कि सन्त-सतगुरु के चुनाव में कौन आया है? हम दुनियादार ऐसे हैं अगर सन्त-सतगुरु हमारे सामने किसी का नाम ले दें कि मैं इसे यह अधिकार देता हूं तो आप सोचकर देख लें, हम उसके साथ कितनी ईर्ष्या-जलन करेंगे?

गुरु गोबिन्द सिंह बहुत लंबा सफर करके पंजाब से दक्षिण की तरफ अबिचलनगर-नांदेड़ गए। वहां उन्होंने बाबा बंदा बहादुर का चुनाव करना था, उसे कुछ अधिकार सौंपने थे। गुरु गोबिंन्द सिंह जी ने संगत के सामने उसके गले में कृपाण डाल दी। कुछ सिखों को जलन हुई, उन्होंने बंदा बहादुर के गले से कृपाण उतार ली और कहा, ''हम आपके साथ बहुत वक्त से हैं, यह तो आपको आज ही मिला है।'' गुरु गोबिन्द सिंह जी चुप रहे, उसे अंदरूनी शक्ति बक्शी और पंजाब की तरफ भेज दिया।

आप आमतौर पर भाई बेला की कहानी सुनते हैं। वह एक सीधा-साधा ज़मींदार था। वह जब गुरु गोबिन्द सिंह जी की शरण में आया तो

गुरु साहब ने उससे पूछा, ''क्यों भाई, तू कुछ पढ़ा–लिखा है, कोई हुनर जानता है?'' भाई बेला ने कहा, ''मैं एक जमींदार हूं, मैं घोड़ों की सेवा बहुत अच्छी कर सकता हूं।'' गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा, ''भाई, तू घोड़ों की सेवा किया कर और हमसे रोज एक तुक पूछ लिया कर।''

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने जुल्म की खातिर तलवार उठाई हुई थी। एक दिन वे जंग में जाने लगे, भाई बेला ने सोचा कि मेरी तुक ना रह जाए इसलिए उसने कहा, ''महाराज जी, मुझे तुक तो बता जाओ।'' गुरु गोबिन्द सिंह जी हंस पड़े कि देखो, दुश्मन दरवाजे पर खड़ा है, मैं जंग में जा रहा हूं, इसे अपनी तुक की पड़ी है। वे हंसकर कहने लगेः

वाह भाई बेला ना पछाणे वक्त ते ना पछाणे वेला।

उसे यह पता था कि मेरे गुरु कभी झूठ नहीं बोलते, ये कुल–मालिक सतपुरुष हैं। उसने उसी को गुरु की दी हुई हदीस समझा और सारा दिन रटता रहा। वहां जो पढ़े–लिखे सिख थे उन्होंने मज़ाक उड़ाया कि गुरु साहब तो पीछा छुड़वाने के लिए कह गए थे और ये इसे ही बानी समझकर बैठा है। जब गुरु गोबिन्द सिंह जी वापिस आए तो वे ग्रंथी पूछने लगे, ''आप भाई बेला को कोई तुक बताकर गए थे?'' गुरु साहब ने कहा, ''मैंने तो इसे कोई तुक नहीं बताई।'' वे ग्रंथी कहने लगे, ''ये तो सुबह से ही यह रट लगाकर बैठा है।''

वाह भाई बेला ना पछाणे वक्त ते ना पछाणे वेला।

गुरु साहब ने कहा, ''हाँ भाई, जो वेला–वक्त नहीं पहचानते वही परमात्मा को पाते हैं, वही गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं।'' अब गुरु गोबिन्द सिंह ने तवज्जो दी, भाई बेला की सुरत चौबीस घंटे लगने लगी। पहले के आए हुए चतुर, पढ़े–लिखे ग्रंथी कहने लगे, ''इस दरबार में अंधेर है, न्याय नहीं। हमें यहां झाड़ू लगाते हुए बीस–बीस साल हो गए हैं, हमारी सुरत नहीं लगी। बेला कल आया है और उसकी सुरत लग गई है।''

गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कहा, ''आप भांग लाओ, इसे रगड़ो फिर हम तुम्हें समझाएंगे।'' वे लोग भांग लेकर आए। गुरु साहब ने कहा, ''देखो भाई, कोई भांग को गले से नीचे ना उतारे।'' किसी ने भांग को गले से नीचे नहीं उतारा। गुरु साहब ने पूछा, ''किसी को नशा आया?'' उन्होंने जवाब दिया, ''जी, गले से नीचे उतारते तो ही नशा आता।'' गुरु साहब ने कहा, ''आपके सवाल का यही जवाब है, आपने सतसंग एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया, अमल नहीं किया।'' अब यह मामूली बात थी लेकिन भाई बेला ने उसे गुरु की हदीस समझा।

प्रेमी आत्मा का गुरु के चरणों में आना कोई कम या ज्यादा वक्त की बात नहीं होता। जैसे हम खुश्क बारूद को आग के नजदीक कर देते हैं। आपको पता ही है कि खुश्क बारूद आग के नजदीक हुआ नहीं और उसने आग पकड़ी नहीं। बाकी हम गीले बारूद होते हैं जैसे-जैसे नाम रूपी, सतसंग रूपी आग की तपिश मिलती है वैसे-वैसे हम अंदर से धीरे-धीरे खुश्क होते हैं। कहने का भाव यह है कि महात्मा किसी के लिए ज्यादा वक्त नहीं लगाते, जो उनकी निगाह में आया उसे मालोमाल कर देते हैं।

नानक नदरी नदर निहाल।

गुरु, सच्चे सेवक का चुनाव करते समय कभी धोखा नहीं खाते, वे संगत को किसी अंधे के पीछे लगाकर नहीं जाते। आपने गुरु तेग बहादुर जी की हिस्ट्री पढ़ी होगी। उन्होंने बचपन से ही तहखाने के अंदर बैठकर अपना अभ्यास शुरू किया था। गुरु हरिकृष्ण जी महाराज ने इतना ही कहा था कि 'बाबा बकाला' और वहां अनेकों ही अपनी-अपनी पार्टियों के जोर पर गुरु बन गए थे।

जब मक्खन शाह लुभाणा का जहाज डूब रहा था, उसने मन्नत मांगी। मक्खन शाह लुभाणा ने लोगों से पूछा, ''इस वक्त गुरु नानक देव जी की गद्दी पर कोई पीर-फकीर है?'' किसी ने बताया कि गुरु हरिकृष्ण जी

यह कह गए हैं कि 'बाबा बकाला'। वह जब बकाला आया तो उसने देखा कि वहां अपनी-अपनी पार्टियों के जोर पर बाईस गुरु बने बैठे हैं। हर एक अपने गुरु की बड़ाई कर रहा था कि सब कुछ इन्हीं को कह गए हैं।

मक्खन शाह लुभाणा उलझन में पड़ गया कि क्या किया जाए? आखिर वह पांच-पांच मोहरें सब गुरुओं के आगे रखता गया। उसके दिल में ख्याल आया कि जो पूरा गुरु होगा वह अपने आप ही बोलेगा। फिर उसने पूछा कि इनके अलावा कोई और भी है? किसी ने बताया कि एक 'तेगा कमला' है, वह शुरु से ही इस मकान के अंदर बने तहखाने में बैठकर अभ्यास कर रहा है।

जब मक्खन शाह उसके पास गया और उसके आगे पांच मोहरें रखी तो गुरु तेगबहादुर अपना कुर्ता उठाकर कहने लगे, ''सेवका! पाँच सौ मोहरों की मन्नत मांगी थी, तेरे जहाज को धक्का मारते हुए मेरे कंधे में कील भी चुभ गए हैं।'' हालांकि सन्त ऐसी करामात नहीं दिखाते। मक्खन शाह छत पर चढ़कर पल्लू घुमाते हुए चिल्लाने लगाः

गुरु लाधो रे, गुरु लाधो रे

जो पार्टियों के जोर पर गुरु बने थे उन्हें पता था कि अब हमारे रोजगार में फर्क पड़ेगा। वे गुरु इसलिए बनते हैं कि अपना रोजगार सही ढंग से चला सके। जब गुरु तेग बहादुर जी बाहर आए, धीरमल की मदद से उन पर गोली चलाई गई। जिस जगह वह गोली चलाई गई, वह जगह मैंने खुद देखी है। जिन्हें सच्चाई की झलक मिली, वे गुरु तेग बहादुर की तरफ लग गए बाकी धीरमल वगैरह जो लोग पार्टियों के जोर पर गुरु बने थे, लोग उनका साथ छोड़ गए ।

याद रखें, कमाई के बिना कोई परम सन्त की पदवी पर नहीं पहुंच सकता। आप दिल से यह ख्याल ही निकाल दें कि जिसने कमाई नहीं की होगी, गुरु उसे संगत की अगुवाई करने के लिए मुकर्रर कर देगा। मैं

हमेशा ही कहता आया हूं कि किसी सन्त को मानने से पहले आप प्यार से उसकी हिस्ट्री पढ़कर देखें, क्या उसने दस-बीस साल कोई भजन-अभ्यास किया है, सन्तमत में कोई कुर्बानी की है? कबीर साहब कहते हैं:

अबरा को उपदेश ते मुख में पड़ है रेत ।
रास बैगानी राख ते खाया घर का खेत।।

गुरु की निगाह में सब होता है कि कौन कमाई करता है? बेशक वह पहले उनकी संगत-सोहबत में न आया हो लेकिन गुरु के ध्यान में सब होता है कि कौन-सी बॉडी तैयार है, मैंने यह काम किसे सौंपना है? वह बर्तन पहले से ही तैयार होता है। यह कोई नई बात नहीं, शुरू से ही असल की नकल साथ में ही चलती आई है। पलटू साहब जी कहते हैं:

जिसदे नाल दस-बीस है तिसका नाम महंत ।।

सबसे पहले हमने कमाई करनी है और अपना जीवन सन्तमत में ढालना है क्योंकि सन्तमत हमें शब्द की पूंजी बक्शता है लेकिन यह फिसलने वाली पटरी के समान होता है, एक कदम फिसला और बहुत दूर जा पड़ता है। एक मामूली-सा गंदा ख्याल आया फौरन सुरत बाहर आ जाती है इसलिए सन्तमत हमसे सालों की मेहनत मांगता है। हमें दिल लगाकर मेहनत करनी चाहिए, अंदर जाकर परख लेना चाहिए क्योंकि अंदर कोई धोखा नहीं होता, अंदर का मार्ग हर एक के आगे किताब की तरह खुल जाता है।

एक प्रेमी: *जिस तरह आप हमारे साथ इतने विचारशील और प्यार-भरे हैं, जब आप अभ्यास करते थे तो आपके पास भी कोई ऐसा था?*

बाबा जी: मेरे प्रभु कृपाल ने मेरे साथ जो प्यार किया, जो हमदर्दी दिखाई सच पूछो वही दर्द आज मुझे तंग कर रहा है, मैं उस दर्द को भूल नहीं रहा। वे हमेशा ही मेरी देखभाल करते थे। वे उस वक्त भी मेरे पास थे और आज भी मेरे पास हैं। इसलिए मैं अपने गुरु के बिछोड़े में कहता हूं:

मेरे जिङ्गा होवे दुखी ओसनू सुणावां दुख
सदा सुखी रहे ओहनू दुख दी पछाण की।
खुसरे की जाणदे ने मेथन दे स्वाद ताई
हाफजा विचारेयां ने पढ़ना कुरान की।
तेरे नाल बीतदी तू जाणदा है अजायब सिंह
गुरु छड्डु जाए संसार ऐदू उत्ते मर जाण की।
मेरे दुख ना पूछो सहेलियो मैंनू हो गया कोई सुदा
मैंनू कृपाल विछोड़ा दे गया ते मेरे रोंदे छड्डु गया चा।

जो बच्चा पढ़ेगा टीचर जरूर उसकी तरफ तवज्जो रखेगा। आप दिल से यह ख्याल ही निकाल दें कि हम भजन–सिमरन करें और हमारा गुरु के साथ प्यार नहीं होगा। सज्जनों, अगर कोई सच्चा प्यार करने वाला है या सच्चा हमदर्द है तो वह हमारा गुरु ही है क्योंकि दुनिया के प्यार में गरज़ छुपी होती है और सतगुरु का प्यार बेग़रज़ होता है।

मेरे गुरुदेव ने मुझे जो प्यार दिया है अगर मैं अपने गुरुदेव का शुक्र करना चाहूँ तो मैं नहीं कर सकता। मैं यही कह सकता हूं कि मैं उसका धन्यवाद करता हूं लेकिन धन्यवाद अंदर जाकर ही होता है। धन्यवाद वही करता है जिसने अपने गुरु के हुक्म की पालना की लेकिन मैं यह भी नहीं कह सकता कि मैंने पालना की है। यह उनकी दया थी कि उन्होंने मुझे अपने काम में लगा लिया और मैं कर सका। कलयुग में जीव तपते हैं, गुरु नाम की बारिश करता है, तपते दिलों को ठंडा कर जाता है, उसकी क्या महिमा ब्यान करें। मैं ज्यादा से ज्यादा अपने गुरु के आगे यही गा सका:

तपदे हिरदे ठारे आके, नाम का मींह वरसा गया,
दुखियाँ दे दुख दूर करन नू, सतगुरु प्यारा आ गया।

मैं आशा करता हूं कि आप सब अपना भजन–सिमरन दिल लगाकर करेंगे, गुरु पर भरोसा बनाएंगे। गुरु के हुक्मों का पालन करने की कोशिश करनी है। सतगुरु का दिल उसी वक्त खुश होता है जब वे अपने बच्चों को कुछ न कुछ देते हैं। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सेवादारों को एक संदेश

सेवा

पोटर वैली

03 मई 1985

हां भाई, आप सबका स्वागत है जी आया नू। मैं आप सबसे मिलकर खुश हूँ। हमें बहुत खुशी है कि सतगुरु परमपिता दयालु कृपाल ने दया करके आपको साध–संगत की सेवा का मौका दिया।

गुरु नानक देव जी ने कहा था, ''हम अपना कुछ नुकसान करके ही दूसरों का संवार सकते हैं, सेवा कर सकते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मन हमें उतना भजन नहीं करने देता, **सेवा** हम देखा–देखी कर लेते हैं। सेवा करने से सेवक को मान मिलता है, सेवा नकद सौदा है। सतगुरु हमें सेवा की बदौलत रूहानियत का बहुत कुछ देते हैं।''

आपके प्रयास से कितने ही प्रेमी फायदा उठाएंगे, भजन करेंगे। उस भजन से आपको जरूर कुछ मिलेगा लेकिन मन से बचें। सेवा करते समय आपके अंदर अहंकार नहीं आना चाहिए क्योंकि मन कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता। स्वार्थ रखकर सेवा न करें, निस्वार्थ **सेवा** करें। सतगुरु ने जो देना है वे दे ही देते हैं। गुरु नानक देव जी ने कहा है:

विच दुनीआ सेव कमाईऐ, ता दरगह बैसण पाईऐ, कहो नानक बाह लुडाईऐ।।

सेवा हमेशा सतगुरु की समझकर करें। अपने गुरु भाइयों का प्यार से हुक्म मानें, मन को बीच में न आने दें, इससे आपको बहुत फायदा होगा। मैं आमतौर पर आप सेवादारों को एक कहानी सुनाया करता हूं:

गुरु अर्जुन देव जी के वक्त एक माहणा जट्ट उनका सतसंगी था। वह लंगर में खूब खाना खाता और प्रेमियों के इंतजाम से पूरा फायदा उठाता अगर किसी ने उससे कहना कि तू यह काम कर तो वह कहता, ''मैं

अपने शरीकों का, गुरु–भाइयों का कहना नहीं मानता। सतगुरु मुझे जो काम कहें, मैं वह करने के लिए तैयार हूँ।'' आखिर प्रेमियों ने सतगुरु को बताया कि माहणा जट्ट लंगर से खाना तो खूब खाता है लेकिन सेवा करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं अगर कोई उससे **सेवा** करने के लिए कहता है तो वह जवाब देता है, ''मैं अपने भाईयों का हुक्म नहीं मानूँगा गुरु साहब का हुक्म मानूँगा।''

गुरु साहब ने माहणा जट्ट को बुला लिया। उसने कहा, ''मैं इनका नहीं आपका हुक्म मानूंगा।'' गुरु साहब ने कहा, ''अच्छा भई, हम जो काम तुझे कहते हैं, तू वह काम कर।'' सन्त–सतगुरु दिलों की जानते हैं अगर उसका मन मजबूत होता तो वह सेवा करता। गुरु साहब ने उसे हुक्म दिया, ''तू बाहर चिता बनाकर उसमें जल जा।'' उन्हें पता था कि इसने जलना तो नहीं सिर्फ उसे समझाने के लिए यह कह दिया।

उसने बाहर जाकर लकड़ियां इकट्ठी की उनको आग लगाई और आग की परिक्रमा करने लगा। जब आग का सेक लगा तो कहने लगा कि अच्छा, अब मैं गुरु का हुक्म भी नहीं मानता। इतनी देर में पीछे से एक चोर आ गया, चोर ने पूछा, ''भाई, क्या बात है, तूने लकड़ियां क्यों जलाई हैं और इनके आस–पास क्यों घूम रहा है?'' माहणा जट्ट ने चोर को सारी कहानी सुनाई कि गुरु साहब ने यह बात कही है कि तू बाहर जाकर लकड़ियां जलाकर मर जा क्योंकि मैंने कभी लंगर की **सेवा** नहीं की। मैं जलना नहीं चाहता इसलिए गुरु का हुक्म नहीं मानता।

चोर ने कहा, ''मैं काफी सारा धन लूटकर लाया हूँ, तू यह धन स्वीकार कर ले और सच्चे दिल से अरदास करके यह कह दे कि जो वचन गुरु ने मुझे दिया है वह मैं तुझे देता हूँ।'' माहणा जट्ट ने सोचा कि इससे सस्ता और क्या सौदा हो सकता है? माहणा जट्ट ने गुरु का वचन चोर को अर्पण कर दिया।

चोर सच्चा था, श्रद्धालु था। वह अग्नि में कूद गया। गुरु साहब ने उसकी आत्मा की संभाल की, उसे अपने चरणों में जगह दी। माहणा जट्ट धन उठाकर जाने लगा कि पीछे से पुलिस चोर को ढूंढती हुई आ गई। हमें पता है जिसके पास चोरी का सामान हो वही चोर होता है, पुलिस ने उसे पकड़ लिया। माहणा जट्ट ने बहुत विनती की, सच्चाई पेश की और सारा किस्सा सुनाया। पुलिस ने कहा, ''हमें नहीं पता तू उस आदमी का सबूत दे कि वह कहां है? चोर तो तू ही है।'' चोर पीछे एक आदमी का कत्ल करके आया था इसलिए माहणा जट्ट को फाँसी पर चढ़ना पड़ा।

जो आदमी **सेवा** के चोर होते हैं, उनका मन वक्त आने पर उन्हें गुरु से भी बागी कर देता है इसलिए मन में अहंकार न आने दें, अपने अंदर नम्रता रखें। यह कहें कि हमसे जो करवाया है गुरु ने दया करके करवाया है और गुरु ऐसे मौके फिर भी देते रहें।

आपको पता है कि भाई लेहणा ने गुरु नानक देव जी की संगत की, हर तरह की **सेवा** की और वे लेहणा से अंगद बने। इसी तरह गुरु अमरदास जी ने गुरु अंगददेव जी की अटूट सेवा की, सेवा के जरिए सब कुछ पाया।

बाबा जयमल सिंह जी के लिए जो फुल्का तैयार होता था, उस आटे के लिए महाराज सावन सिंह जी अपने हाथों से चक्की पीसते थे। उनकी फैमिली की औरतों और पत्नी ने कहा, ''आप यह मौका हमें दें।'' वे कहने लगे, ''नहीं, यह मेरे ही करने वाला है।''

महाराज सावन सिंह जी की माता जीवनी लंगर के लिए अपने हाथ से चक्की से आटा पीसकर लाती थी। उस वक्त हिन्दुस्तान में आम आटा पीसने वाली मशीनें नहीं थी। महाराज सावन सिंह जी की ये कहानियाँ भाई सुंदरदास बताया करते थे, आप ये कहानियाँ मिस्टर ओबरॉय की किताब में पढ़ते हैं। वे महाराज सावन सिंह जी के ज्यादा से ज्यादा नजदीक रहे हैं, जिन्होंने फायदा उठाया होता है **सेवा** के जरिए ही उठाया होता है।

मैं अपनी माता की तरफ देखता रहा हूँ। मेरी माता ने जो गुरु धारण किया था, उनके लंगर के लिए मेरी माता खुद चक्की से आटा पीसकर ले जाती थी। हमारे अंदर अहंकार नहीं आना चाहिए। हमें गुरु का धन्यवाद करना चाहिए कि आपने मुझे **सेवा** का मौका दिया है और यह उम्मीद भी करनी चाहिए कि हे सतगुरु, मुझे आगे भी मौका देते रहना।

मैं अपने ऊँचे भाग्य समझता हूँ कि दयालु कृपाल कुलमालिक ने 'सुरत-शब्द' के अभ्यास के अलावा जो भी मुनासिब था, मुझे **सेवा** का मौका दिया। उन्होंने मुझे अपने चरणों में लगाया। यह उनकी दया ही थी कि उन्होंने इस गरीब के खेत से ही गेहूँ मंगवाई और गाय का घी मंगवाया। जिस खेत में उनके लिए गेहूँ उगाई जाती थी उसमें खेती का काम मैं खुद करता था और उस गाय को अपने हाथों से चारा डालता था। सिमरन चलता रहता था, इससे ज्यादा गुरु और क्या दया कर सकते हैं? मैंने उस सेवा को स्वर्ग के राज्य से भी ऊँचा समझा।

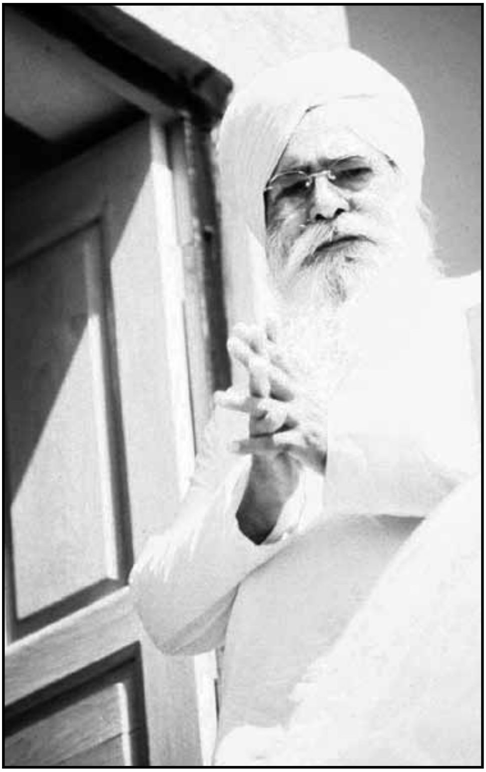

मैं आप सबसे मिलकर बहुत खुश हुआ हूं। मैं आशा करता हूं कि सतसंगियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें जिस चीज की जरुरत पड़ती है आप दिल लगाकर उनकी **सेवा** करेंगे, आपस में प्यार बनाकर रखेंगे। मैं आप सबका धन्यवाद करता हूं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा अनमोल वचन

पति-पत्नी

सन्तबानी आश्रम, न्यू हैम्पशायर

27 मई 1977

जब से संसार बना है, परमात्मा ने ऋषियों-मुनियों और महात्माओं को इस दुनिया की मर्यादा कायम रखने के लिए भेजा। उन्होंने भ्रष्टाचार को रोकने और लोगों को सुख से जीवन व्यतीत करने का तरीका बताया।

ऋषियों-मुनियों ने बताया कि हमने जिसके पेट से जन्म लिया वह हमारी माता है। कौन हमारा पिता और कौन हमारे भाई-बहन हैं। **पति-पत्नी** जीवन के साथी हैं, जिन्हें अपना बनाने के लिए हम दुनिया के सामने कसमें खाते हैं। अगर हम इस रिश्ते को नहीं निभाते तो हम दुनिया और परमात्मा की निगाह में अच्छे नहीं समझे जाते।

जो माता-पिता अच्छे विचारों से अपने बच्चों का पालन-पोषण करते हैं उन बच्चों की सोच भी अच्छी होती है। अच्छे बच्चे ही ऐसे घर में जन्म लेते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो माता-पिता अपने बच्चों को अच्छा बनाना चाहते हैं, वे पहले खुद अच्छे बनें क्योंकि बच्चों पर माता-पिता का ही प्रभाव पड़ता है।''

महात्माओं ने हमें **पति-पत्नी** के रिश्ते के बारे में समझाया कि यह बहुत ही नाजुक और पेचीदा रिश्ता है जिसे हमने पूरी जिंदगी निभाना है। एक समय था जब पति मर जाता तो पत्नी किसी और आदमी की तरफ नहीं देखती थी, पति के साथ ही सती हो जाती थी। अब वह समय नहीं रहा, हम सब सीमाएं पार कर चुके हैं।

हम बेलगाम होकर इधर-उधर भटक रहे हैं। पति, पत्नी की परवाह नहीं करता। बच्चे अपने माता-पिता की परवाह नहीं करते। अब हमने शादी तोड़ने का एक नया रिवाज तलाक बना लिया है। इसका बच्चों पर

क्या असर पड़ता है? जब **पति–पत्नी** अलग हो जाते हैं तब बच्चे किस तरह दुखी होकर माता या पिता किसी एक के पास रहते हैं।

महाराज कृपाल सिंह जी तलाक को अच्छा नहीं समझते थे। हुजूर कहा करते थे, ''अगर एक इंसान दूसरे इंसान के प्रति प्रेम कायम नहीं रख सकता तो वह परमात्मा के साथ कैसे प्रेम कर सकता है।''

भारत में परंपरा है कि माता–पिता ही अपने बच्चों की शादी तय करते हैं। यहाँ के लोग इस नियम को दृढ़ता से मानते हैं और इस तरह की शादी में तलाक का कोई सवाल पैदा ही नहीं होता। आपको राजस्थान में **पति–पत्नी** के तलाक के मामले नहीं मिलेंगे।

औरत की जिसके साथ शादी हो जाती है, वह सिर्फ उसी आदमी को अपना पति और बाकी आदमियों को अपना भाई समझती है। इसी तरह आदमी भी इन बातों को मानता है कि जिसके साथ उसकी शादी हुई है, वही उसकी पत्नी है बाकी सब औरतें उसकी माँ या बहनें हैं। बाहरी जिंदगी का अनुशासन हमारे अभ्यास के लिए भी अच्छा है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अपनी आँखों से किसी पराई औरत को देखना बहुत बड़ा पाप है।'' पति–पत्नी का रिश्ता बहुत गहरा होता है, इस रिश्ते के जरिए ही हम अपनी दुनियावी जिंदगी को आसानी से चला सकते हैं लेकिन जब हम अपने मन को काबू में नहीं रख पाते तो पति शादी के रिश्ते को तोड़ देता है या पत्नी इस दिशा में कोई कदम उठाती है फिर हम कहते हैं कि हमें अंदर कुछ दिखाई नहीं देता।

ऐसे लोगों पर दया आती है जिनकी बाहरी जिंदगी साफ सुथरी नहीं, वे चाहे कई घंटे आँखें बंद करके बैठे रहें, उन्हें अंदर क्या दिखाई देगा? अगर एक आदमी के साथ प्यार के रिश्ते को निभाना मुश्किल है तो एक ही समय में बहुत सारे लोगों के साथ प्यार कैसे निभा लेंगे?

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

यह सतसंग केवल **पति–पत्नी** के लिए नहीं सबके लिए है। कबीर साहब कहते हैं, ''जो किसी की पत्नी कहलाती है लेकिन किसी दूसरे आदमी के साथ सोती है तो वह किस तरह अपने पति को खुश कर सकती है? जबकि हर समय उसके मन में उसका प्रेमी समाया रहता है।''

सन्तमत में भी यही बात लागू होती है अगर हम भजन–सिमरन में बैठे हुए दुनियावी चीजों को अपने मन में बसा रहे हैं तो हम अपने साथ धोखा कर रहे हैं। लोग शादी करके एक–दूसरे से प्यार करने की कसमें खाते हैं, एक ही बिस्तर पर सोते हैं, एक–दूसरे को अपना शरीर दे देते हैं लेकिन मन नहीं देते इसलिए वे दुखी रहते हैं।

एक बार महाराज सावन सिंह जी सतसंग दे रहे थे तब मस्ताना जी ने उनसे पूछा, ''अगर शिष्य को शब्द में रस आ जाए तो उसे अपने गुरु को क्या अर्पित करना चाहिए?'' महाराज सावन सिंह जी ने कहा, ''शिष्य को गुरु पर अपना मन अर्पित कर देना चाहिए।'' मन अर्पित करना आसान नहीं। पत्नी, पति को शरीर तो दे देती है लेकिन मन नहीं देती। हम अपने मन के सामने मुर्दे के समान हैं। हमारा मन जो चाहता है हमसे करवा लेता है, हम मन का कहना मानकर ही मीट–शराब का सेवन करते हैं और झूठ बोलते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''जब हमें नामदान मिल जाता है तो हम अपने गुरु से कहते हैं कि हमने अपना मन आपको दे दिया है।'' हमारे अंदर बैठा हुआ गुरु हमें खुश देखना चाहता है इसलिए कहता है, ''ठीक है आप जो भी कहते हैं मैं उसे मान लेता हूँ।'' गुरु परमात्मा है वह सब जानता है कि हमारे मन में क्या है? जो अपने गुरु के आगे मुर्दे के समान है वही साधु है। मरा हुआ शरीर वही करता है जो उसका गुरु उसे करने के लिए कहता है।

अगर पत्नी सौलह श्रृंगार करके कई तरह के गहने पहनकर भी अपने पति को खुश नहीं कर सकती तो उसके श्रृंगार का क्या फायदा? अगर

हम दिन–रात साधु के पास रहते हैं, सतसंग सुनते हैं लेकिन मन को काबू में नहीं कर पाते तो हम शारीरिक रूप से सतसंग में जाते हैं लेकिन हमारा मन इधर–उधर भटकता रहता है। हम नाम के रंग में कैसे रंग सकते हैं? हमारा मन स्थिर नहीं, यह घोड़े की तरह बहुत तेज भागता है। आप इस मन को अंधेरी कोठरी के ताले में बंद कर दें, तब भी आप देखेंगे कि आपका मन दूर किसी और दुनिया में भटक रहा है।

आप जिस प्यार से अपने शरीर को सतसंग में लाते हैं उसी प्यार से अपने मन को भी सतसंग में लाएं और अपने मन से कहें, ''यह सतसंग तुम्हारे लिए है।'' कबीर साहब कहते हैं, ''अगर हमें रात को किसी नाचने वाली के साथ नाचना हो तो हमें नींद नहीं आएगी अगर साधु के सतसंग में जाते हैं तो हमारा शरीर तरह–तरह के बहाने बनाता है, हमें नींद आती है।''

एक महात्मा का कहना है, ''अगर नाचने–गाने का माहौल हो तो मन दिलचस्पी लेता है लेकिन सतसंग में हमें नींद आने लगती है। व्याभिचारणी औरत चौबिस घंटे सावधान रहती है। धोखा देने से बड़ा कोई पाप नहीं। कोई पत्नी चाहे कितना भी भजन–सिमरन कर ले अगर वह अपने पति को धोखा देती है तो परमात्मा उससे कभी खुश नहीं होगा।''

द्वापर युग में रावण हुआ है, वह एक ज्ञानी पंडित था। उसने धोखे से रामचन्द्र की पत्नी सीता का हरण किया तो उसे श्राप मिला। हिन्दु लोग अभी भी उसे नहीं भूले। उत्तरी भारत के लोग आज भी साल में एक बार रावण का पुतला बनाकर जलाते हैं।

मैंने शुरु में ही बताया था कि परमात्मा ने ऋषियों–मुनियों को संसार की मर्यादा कायम रखने के लिए भेजा है अगर हम परमात्मा के बनाए नियमों को तोड़कर अपने मन की बात सुनते हैं तो परमात्मा हमें कभी माफ नहीं करेगा। कबीर साहब कहते हैंः

कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा, जाति वरन कुल खोय।।

कामी कभी संतुष्ट नहीं होता। हम काम की इच्छा को जितना बढ़ाते हैं यह उतनी ही बढ़ जाती है, इससे हमारे शरीर को शक्ति प्रदान करने वाला तरल कम हो जाता है। हमारा शरीर खराब हो जाता है, हमारे माथे की ज्योति बुझ जाती है। जिस तरह आग में लकड़ियां डालने से आग और भड़कती है। जब आप परमात्मा के दरबार में पेश होंगे, वहां क्या लेकर जाएंगे? कामदेव कहता है, ''ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उनकी इज्जत करते हैं जो लोग मेरा गलत उपयोग नहीं करते।''

कामी परमात्मा की भक्ति नहीं कर सकता क्योंकि उसके मन में हमेशा शक और झूठ बना रहता है। ऐसे झूठे लोग भक्ति के नाम को बदनाम करते हैं। इस तरह के लोग व्याभिचार करके अपनी जिंदगी बर्बाद कर लेते हैं, उनका एक पैर व्याभिचार की तरफ और दूसरा भक्ति की तरफ होता है। सोचकर देखें, दो नावों पर सवार होने वाला किस तरह नदी पार कर सकता है?

जिसने अपनी जिंदगी का तरल पदार्थ नहीं खोया, वह लगातार पाँच–छह घंटे बिना पीठ हिलाए भजन में बैठ सकता है। वह जैसे ही भजन पर बैठेगा उसकी आत्मा ऊपर चली जाएगी, उसे समय का ख्याल नहीं रहेगा।

आखिर में कबीर साहब कहते हैं, ''इस दुनिया में आकर जो आदमी बहुत से दोस्त और साथी–संगी बनाता है, वह खुश नहीं रह सकता। अगर वह एक दोस्त बनाता है तो खुशी से सो सकता है और खुशी से अपनी जिंदगी बिता सकता है। उसी तरह अगर हम दुनिया में आकर एक से ज्यादा गुरु धारण करते हैं और बहुत से देवी–देवताओं की पूजा करते हैं तो हम इस जिंदगी का आनन्द नहीं ले सकते क्योंकि इससे हमें शान्ति नहीं मिलेगी।''

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ।।

यह शरीर एक महल है। इसके अंदर परमात्मा का तख्त है, परमात्मा खुद उस तख्त पर बैठा है। जो 'पाँच शब्द' की कमाई करता है, वही उस तख्त पर बैठने के लायक है।